चतुर्थ सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

कहानी

PAPER EC – (1)(ख)

कामरेड का कोट : सृंजय

'कामरेड का कोट' आजाद भारत में वामपंथी धारा की बौद्धिकता और जमीनी सच्चाईयों के बरक्स उसके नाकाम होने के कारणों की पड़ताल का खरा विश्लेषण प्रस्तुत करती है। कहानी के मुख्य पात्र कमलाकांत को हमारे समाज में व्यवस्था विद्रोह की जरूरत और अनिवार्यता की मशाल उठाने वाले के रूप में पेश किया गया है। जब हालत मौखिक प्रतिरोध से आगे "ग्राउंड जीरो" पर सक्रियता का, अपने अस्तित्व और सर्वाइवल (सुरक्षा) का हो जाता है, तब मात्र बौद्धिक विमर्श से काम नहीं चल सकता। "क्रांति कोई रोमांटिसिज्म नहीं है और ना सिर्फ खा–पीकर अघाये मुखों से प्रवचन देने को जुटे शब्द वीरों की जुगाली का मंच और न अकर्मण्य चापलूसों की भीड़ जुटाने का प्रयोजन। दुखद है कि यह प्रवृति ना सिर्फ वामपंथ में बल्कि इधर प्रायः सभी धाराओं में पनप गयी है।"

हम रेणु जी के "मैला आँचल" में वामनदास का मोहभंग देख चुके हैं। सृंजय की बड़ी बारीकी से इन कारकों को बुनते हुए वस्तुस्थिति को ठेठ स्थानीय बोली और मिजाज में बयां करते हैं। कामरेड को रूस से मिला हुआ "कोट" एक प्रतीक है–केवल बौद्धिक धरातल पर श्रेष्ठता का

गुमान करने वाली प्रवृति की। और कहानी के अंत में जब कमलाकांत रूसी लाल कोट को ले जाने वाले होते हैं तो पार्टी के प्रतिनिधि बड़े नेता रक्तध्वज खुद सामंत की भूमिका में खड़े होने लगते हैं, जबकि उनके हिसाब से "क्रांति के लिए जरूरी है, पहले खुद को डी क्लास करना" लेकिन क्या वाकई वे डी. क्लास हो पाये हैं? यही प्रश्न मथता है...। क्लाइमेक्स का संवाद व्यावहारिकता और आदर्श बुद्धिजीवता के खोखलेपन को rh{.krk से उजागर करता है...। "कमलाकांत ने अट्हास किया–"ठंड से बचने का एक हथियार है कोट...आपने कहा था न कामरेड। यदि सचमुच जरूरत हुई तो अपने आप हमारे पास हथियार आ जाएगा।" कोट को वापस लेते हुए कामरेड रक्तध्वज के चेहरे की जुगुप्सा और तमतमाहट उनको भी उसी बुर्जुवा वर्ग के कोटे में ला खड़ी करती है, जो उनका घोषित वर्ग शत्रु है। यह कायान्तरण दरअसल, इस देश की सामाजिक, राजनैतिक परिप्रेक्ष्य को नजरअंदाज कर मार्क्सवाद को यथावत चस्पा किए जाने की कोशिश का हताशपूर्ण परिणति का एक पहलू है। कमलाकांत कहता है–"मार्क्सवाद ने मुझे यही सिखाया है कि अपनी–अपनी परिस्थितियों के अनुसार उसका क्रियान्वयन किया जाना चाहिए..." जाहिर है, ऐसा नहीं हुआ है। इस देश में वाम विचारधारा को रूढ़ि की तरह थोपा गया, जिसके कुछ अधिक सकारात्मक परिणाम नहीं हासिल हुए और अंततः यह धारा स्थिति आपसी मतभेदों, कलह और वैचारिक–चारित्रिक पतन की ओर बढ़ी। वामपंथ का गढ़, बंगाल भी इस बार धराशायी हो गया...

कमलाकांत के व्यावहारिक तर्क पार्टी के पहरेदारों को तिक्त और बौखला देती है। "पत्थर से काँच चकनाचूर किया जा सकता है, लेकिन उससे मनमाना आकार नहीं पाया जा सकता।" क्योंकि इन तर्कों का जवाब उनके पास नहीं है...किताबी ज्ञान के सहारे खोखल में सिकुड़े भीरू बौद्धिक वर्ग जमीन से कितना जुड़ा होता है ना, इस असलियत को स्वीकार ही कर पाता है। कमलाकांत की बुद्धिजीवी वर्ग पर तीखी उलाहना जायज लगती है" सच कहूँ तो आपलोगों का व्यवस्था विरोध उस वेश्या के गुस्से की तरह है कामरेड, जबतक उसे पूरे नजराने नहीं मिल जाते, फिर तो वह ऐसा परोसती है...ऐसा परोसती है...कि अब मैं क्या कहूँ?" इस तथाकथित बुद्धिजीवियों और निर्णय–नीति निर्धारकों की खोखली आशावादिता और पनप रही मौका परस्त मानसिकता भी पंचतंत्र की एक दृष्टांत कथा द्वारा बेनकाब करते हैं, जाहिर है, इस पर सब तिलमिला उठते हैं, जबकि कमलाकांत अपने लक्ष्य पर स्पष्ट हैं कि "जनता को जन संघर्षों के माध्यम से एक वैकल्पिक व्यवस्था के लिए तैयार करना चाहिए" इसलिए वह फैसला करते हैं कि "मार्क्सवादी कर्मकांडियों के संघर्ष और क्रांति की किताबी व्याख्याओं के मकड़जाल से उन्हें बाहर निकलना होगा ही होगा।"

इस देश में आज भी ऐसा वर्ग है जो क्रांति को केवल रूमानी सपने की तरह युवाओं की आँखों में भरता है, महज अपने स्वार्थ के लिए जबकि जमीन पर आकर एक्टीविष्ट की भूमिका निभाने से कतराता है। सिर्फ

किताबी समझ से और दकियानुसीपन से वैकल्पिक व्यवस्था नहीं तैयार हो सकती है। "कामरेड का कोट" इसी तथ्य को उजागर करता है। लेखक नायक के जरिये एक कटु सच भी सामने रखता है निष्कर्ष की तरह–"सतमासे बच्चे की तरह अविकसित भारतीय जनतंत्र में हमें जो थोड़ी बहुत स्वतंत्रता मिली हुई है, उसका वर्गहित में इस्तेमाल करना मैं भी पसंद करता हूँ, लेकिन व्यूह के भीतर घुसपैठ के साथ–साथ बाहर से भी आक्रमण करना पड़ेगा।" संसदीय व्यवस्था पर कमजोर आस्था के बावजूद कमलाकांत चाहते हैं कि "बाहरी और भीतरी आक्रमण के बीच एक तालमेल होना चाहिए। अगर सिर्फ चुनाव तक ही अपने को समेट लें तो जनतंत्र में चुनने और मत व्यक्त करने के लिए जिस सामाजिक विवेक की जरूरत पड़ती है, उसे हम खो देंगे।"

"कामरेड का कोट" वामपंथ को खोखला बनाने वाली कारणों का यथार्थवादी प्रहसन है। शिल्प और भाषा का अनूठापन भी है। कहने की जरूरत नहीं कि सृंजय की यह कहानी एक बड़ी कहानी होने के सारे तत्व को लिए खड़ी है।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : ausheeroy.roy@gmail.com